Page-1 B.ed 1st year
Paper - C2
Unit - 3

रवीन्द्रनाथ टैगोर

जीवन परिचय :- रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म बंगाल में 6 मई 1861 को हुआ था उनके पिता का नाम महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर था। महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान एवं उत्साही समाज सुधारक थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर को औपचारिक विद्यालयी शिक्षा बहुत ही कम मिली। पर में ही उन्होंने संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, संगीत, चित्रकला आदि की श्रेष्ठ शिक्षा निजी अध्यापकों से प्राप्त की।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वे 1878 में इंग्लैंड गये। वहाँ भी वे कुछ ही दिन तक ब्राइटन स्कूल के विद्यार्थी के रूप में रह पाये। फिर वे भारत लौट आए। पुनः 1881 ई० में कानून की पढ़ाई के विचार से वे विलायत गये। पर वहाँ पहुँचने के उपरांत वकालत की पढ़ाई का विचार उन्होंने त्याग दिया और वे स्वदेश वापस आ गये। इस प्रकार उन्होंने औपचारिक शिक्षा तो प्राप्त नहीं की, पर पूर्व और पश्चिमी संस्कृतियों का उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला। दोनों ही संस्कृतियों का सर्वश्रेष्ठ तत्व रवीन्द्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व का हिस्सा बन गया।

1901 में बोलपुर के समीप रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रह्मचर्य आश्रम के नाम से एक

विद्यालय की स्थापना की, जिसे बाद में शान्तिनिकेतन के नाम से पुकारा गया। उन्होंने अपने को पूर्णतः शिक्षा साहित्य एवं समाज की सेवा में अर्पित कर दिया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा संबंधी कृतियाँ :-

रविन्द्रनाथ टैगोर एक महान रचनाकार थे। उनकी रचनाओं का संसार बहुत ही विस्तृत था। शिक्षा से संबंधित उनकी चार महत्वपूर्ण पुस्तकें है। सबसे अधिक प्रसिद्ध पुस्तक 'शिक्षा' है जो प्रथम बार 1908 में प्रकाशित हुई। शिक्षा से संबंधित रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाएँ शिक्षा के विभिन्न स्तरों एवं पक्षों - 'प्राथमिक शिक्षा', 'उच्च शिक्षा', ग्रामीण - शहरी', & 'व्यक्ति - समुदाय' का चिंतन करते है।

* शैक्षिक विचार

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन के सिद्धान्त है -

1.) सभी के लिए शिक्षा का लक्ष्य आत्मबोध होना चाहिए।

2.) शिक्षा के साथ आधुनिक पाश्चात्य वैज्ञानिक अभिवृत्तियों को संश्लेषित कर शिक्षा का लक्ष्य निर्मित किया।

3.) सृजनशील विद्यार्थियों को विकसित करने हेतु बच्चे को आत्म अभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए।

5.) वह शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा धार्मिक विकास के साथ मानव शक्ति के सामंजस्य विकास का समर्थन करते थे।

5.) शिक्षा का लक्ष्य बच्चे को आत्मसंतुष्ट बनाना तथा जीविकोपार्जन करना है।

6.) शिक्षा को बच्चों को राष्ट्रीय संस्कृति के विचारों एवं मूल्यों के अभ्यास हेतु योग्य बनाना चाहिए।

7.) शिक्षा से बच्चों को सम्पूर्ण मानव बनने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए।

* शिक्षा के उद्देश्य :-

रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारों के आधार पर उनके शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है-

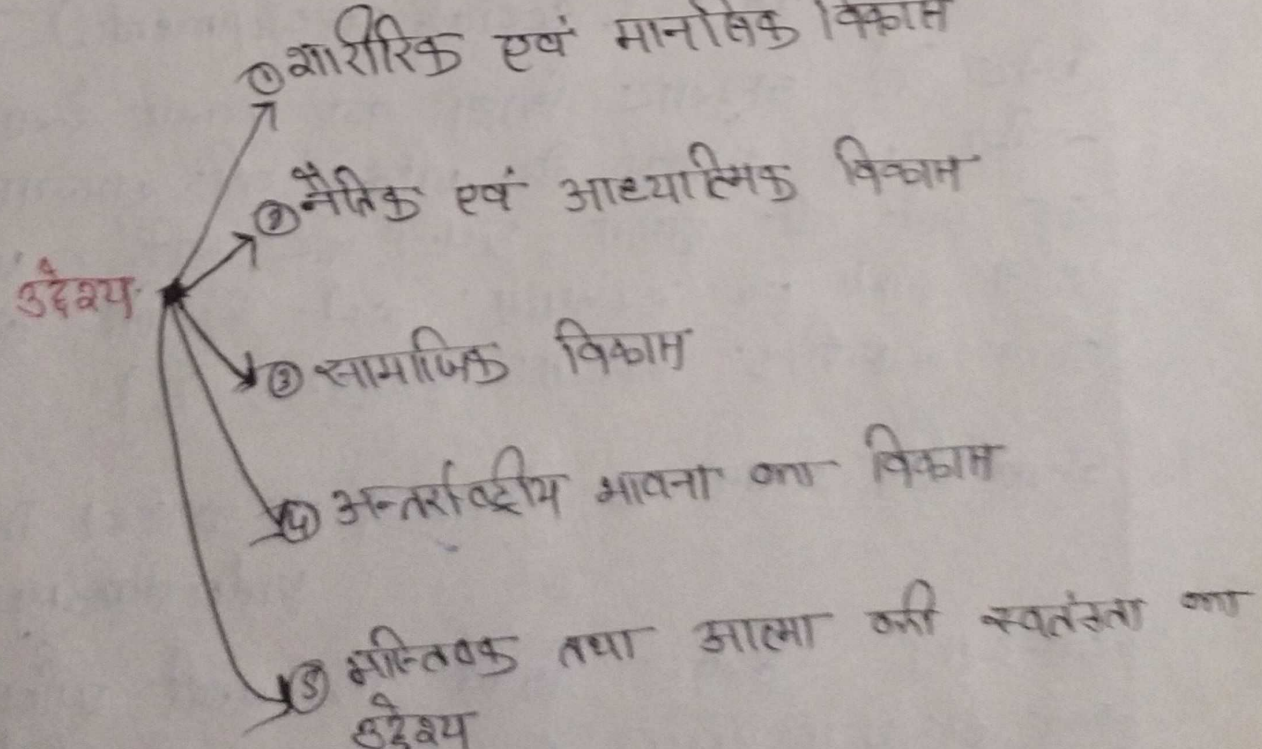

1. शारीरिक एवं मानसिक विकास (Physical and mental development) :-

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य यह है कि बालक के शारीरिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाये। शारीरिक विकास के लिए विभिन्न प्रकार के स्वाभाविक व्यायाम एवं खेल-कूद को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। सच ही कहा गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।

2. नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास (moral and spiritual development) :-

टैगोर के अनुसार शिक्षा वह है जो बालक के नैतिक गुणों का विकास करें। सच्ची नैतिक शिक्षा वह है जिसमें आध्यात्मिकता की झलक हो। व्यक्ति की प्रगति के लिए उसका नैतिक और आध्यात्मिक विकास होना जरूरी है।

3. सामाजिक विकास (social development) :-

टैगोर के अनुसार शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो बालक के जीवन की समस्याओं को हल करने की क्षमता उत्पन्न कर सके। जीवन में पूर्णता लाने एवं एकरूपता लाने के लिए व्यक्ति का उचित सामाजिक विकास आवश्यक है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास (To Develop International Understanding) :-

रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्व के सभी प्राणियों को एक ही परम पिता की सन्तान मानते थे अतः देश, काल और परिस्थितियों के कारण उनमें संघर्ष नहीं होना चाहिए इसलिए शिक्षा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास होना चाहिए।

5. मस्तिष्क तथा आत्मा की स्वतन्त्रता का उद्देश्य (Freedom of the mind and the soul) :- टैगोर का कहना है कि ईश्वर को प्राप्त करने और मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए आत्मा का स्वरूप स्वतंत्र होना चाहिए।

* शिक्षा का पाठ्यक्रम (curriculum of Education)

टैगोर किया प्रधान पाठ्यक्रम के समर्थक थे। उनके अनुसार पाठ्यक्रम के मुख्य विषय व क्रियाएँ निम्न प्रकार है।

(i) विषय — इतिहास, भूगोल, साहित्य विज्ञान, प्रकृति अध्ययन, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, भाषा गणित आदि।

(ii) क्रियाएँ — भ्रमण, अभिनय, चित्रकला, बागवानी, हस्तकलाएँ, प्रयोगशाला कार्य, लेखन।

(iii) अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाएँ — खेल-कूद, ~~समाज~~ समाज सेवा, छात्र स्वशासन आदि।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'विश्व भारती' में इस प्रकार के पाठ्यक्रम को साकार रूप दिया है।

* शिक्षण पद्धति (Teaching method) :-

टैगोर ने निम्नलिखित शिक्षण पद्धतियों का समर्थन किया है।

शिक्षण विधि

- क्षमता द्वारा सीखना
- वाद विवाद
- प्रश्नोत्तर विधि
- क्रिया विधि

* अनुशासन (Discipline)

टैगोर अनुशासन के महत्व को समझते थे, परन्तु वे बाहरी व्यवस्था के रूप में नहीं आन्तरिक भावना के रूप में स्वीकार करते थे। इस आन्तरिक भावना के विकास के लिए वे दण्ड व्यवस्था का विरोध करते थे। इन्होंने स्पष्ट किया था कि दण्ड से बालक उदण्ड होते हैं, उनमें विरोध की भावना विकसित होती है। अतः टैगोर के अनुसार सबसे उत्तम अनुशासन आत्म - अनुशासन है।

* शिक्षक (Teacher)

टैगोर ने शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। शिक्षक के विषय में इनके विचार पूर्ण रूप से परम्परावादी थे। इनकी दृष्टि से शिक्षक को त्यागी, संयमी और बच्चों के प्रति समर्पित होना चाहिए। वास्तविक शिक्षक वही है जो बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के साथ - साथ स्वयं भी निरन्तर ज्ञान की खोज में लगा रहे।

* टैगोर द्वारा स्थापित संस्थाएं

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अनेक शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना की, जो इस प्रकार हैं

1. शान्तिनिकेतन - 1901
2. श्रीनिकेतन - 1905
3. विश्वभारती - 1921

निष्कर्ष

इस युग में हमारे देश में जो महान पुरुष हुए है उनमें ~~मे~~ बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्तियों में दो व्यक्ति गौरवास्पद पद विराजमान है और वे हैं - महात्मा गाँधी और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर। रवीन्द्रनाथ टैगोर की सबसे अधिक ख्याति साहित्य के क्षेत्र में है परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका योगदान कम नहीं है। टैगोर का शिक्षा के विषय में बहुत व्यापक दृष्टिकोण था। मानव धर्म और मानवीय गुणों के आधार पर सभी संकीर्णताओं से ऊपर उठकर उन्होंने विश्व धर्म की व्याख्या की और उसे शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया।